

१०.७.२३

मराठा

वेदांत-

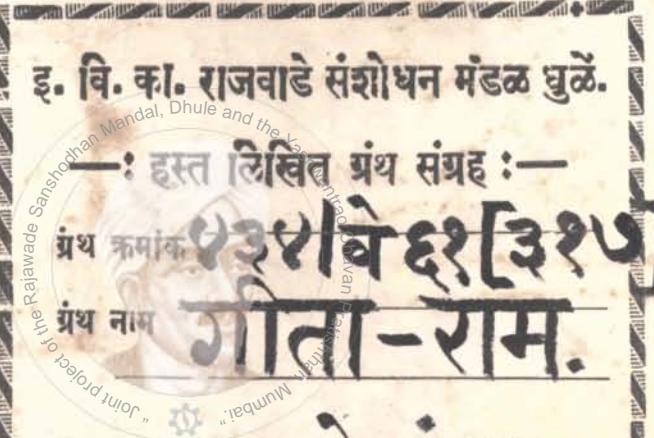
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३४ विं दर [३१५]  
ग्रंथ नाम गीता-राम.

विषय

म० वेदांत.



(1)

प्रमाणित

से ॥६३॥ तथा दिये थे हसं बंध जसे ॥ न रिच वा चासं के ति  
 प्रवेश ॥ के वालि प्रवेश के से निअसे ॥ वा चा प्रवेशी विभिटि  
 जाए ॥ ६४॥ यमां चौं वैगचें आ रुच न था ॥ वा चान प्रवर्गा स  
 वभा ॥ बलि तवं जा निरुणा दि का वाजा ॥ नाहिं क आसं बंध  
 कि वेची ॥ ६५॥ अधवा ना हिन न संकेत ॥ वा चा के ची प्रवर्ग  
 लते था तें निरुणनि स्यानं दृ ॥ रुच में प्रकाश न रुच प्रका  
 शे ॥ ६६॥ रेसे जेस चिन्ना त्रजाए ॥ दो निपदें बोलता जानं दृ  
 ण ॥ न बोलता चिन्ने स्वयं जाए न संडिवे क पण स्तणा न  
 था ॥ ६७॥ उगास ता ते थ ऊं हान जस ॥ हान ते थ आन इहा

"Digitized by  
Rajivade  
Anshuman Mandal, Dhule and the  
Sachivalay  
Digitized by srujanika@gmail.com"

(2)

से। आनंदतेभस्तनकानजसे। सामरस्येंमिन्हुपदे॥११॥

पाठ्याग्निसच्चिन्मात्रजेऽनकेवलगतत्प्रभुअस्तोसवकाव्यग

निः सवधानबाधीभवजाव्यानिस्त्वस्त्वरव्ययेच्च॥१२॥ अगास

च्चिदसदकाव्यमा। हेव्यारव्यानकेलेगारचुराया। यागा

निः गिक्षलपरहोउनियाँ। सातेयानित्यनन्दे॥१३॥ अंभाचेहद

येनकाटिता। करिबीरिकाजेव्यारव्यानकथा। तेकाव्यक्ते

मणुकपरिसशानओता। निशांतितत्वतानपाविजो॥१४॥

आव्याव्यगोपालसमजति। परिचन्द्रनुरओस्यांचोधायमीति॥१५॥

तेस्त्वेव्यारव्यानकेयांसंति। निवति। चित्तिंसाधुओते॥१६॥ आ

गिअपणतोहेचिकरावें। साधुचेहदयतोषवावें। तेसां

१२९।

(2A)

धुसंतोषलियांस्यभावें॥४०॥  
 अगासा धुसन्मुरवजालियो॥ कायस्तिहोवेआपागि  
 यां॥ साधुविमुरवनेजायवायां॥ कष्टकेलियाकल्पका॥४१॥  
 लगेनिजास्तिहेंचिकरें॥ संतांस्यमनितेलेवारवागिलें॥  
 वारवागितांसोनभलें॥ येतनकवेलगेनिउबगा॥४२॥  
 तेययातेंपालकल्पस्याति॥ स्वयंतरेनकवेग्रंओक्तिः॥  
 सोसाधुजनतोनिवतिग्रंभव्यक्तितयात्तुगिरा॥४३॥  
 रित्तरास्तिहिकरुणिनमनग्रयधामतिकौजेलवारवा  
 न॥ श्रीतांदेउनिअवधानग्रंभानुसंधानपरिवेसा॥४४॥

(3)

वक्षिष्ठलणति रघुनाथा। उनरुपिनिदिघ्यासनाचीकथा॥  
 उपायदुसरोग्रहिपरतागसांगोंतत्त्वताजयिका॥७॥ क्लो-  
 का। ॥ अजायदद्यमनिदिघ्यात्तरं सनातनं सचेत-  
 नं विशुद्धनमयः संविदामवा॥८॥ टौका। ॥ अग्रजल-  
 रक दुजे अस्ते। स्त्रान्नागिनानाकरणिसाहसे। जाणवै-  
 सानि सीरेसें मनारिनकैतेसें दुराया॥९॥ अग्रजल-  
 नें स्वतानुंचिथ्यस्तसि। या आपणापावावयाजानंदराशि।  
 साहको सोसद्याकरिस्ति। सिद्धजस्तिनुशानुंची॥१०॥ ॥१३॥  
 नरितोंचित्तुझें स्वरूपतें केसें। जायिकरघुनाथासावकारि॥

॥१२॥०॥

॥१३॥०॥

Ajayadev Sajodhan Mandar, Omkar and the Yashoda Gauri Claves  
 Prof. Dr. B. N. Venkateswaran

(३A)

तरिजाग्निर्वप्तुषुभिवदें। तेंचिजसेर्वरूपनुद्दें॥१॥ अ  
 गा अवरस्थात्रयाहुनिवेगव्या। अवरस्थाभयांचासाक्षीके  
 व्या। तेंचितुद्देंर्वरूपनिमध्या विमनिर्वलसनानन्॥२॥  
 नाहो। अवरस्थात्रयांतेजाणत। किञ्चित्तिभिन्नानि अहाति  
 आयते॥ विघ्नेजसमात्प्रयत्नं। अभिननियानेजाण  
 तसा॥३॥ हेतरियथाशब्दे। लुहति। अवरस्थोतं अभिनान  
 जाणति। विरहेयेकीतेचिप्रकार्याति। इउजिनेणति। अस  
 वशपणे॥४॥ अहोर्वभावंरहुचेसान। सर्वधाविघ्नेणेऽ  
 पा। तेजसाजांरहुत्तेजेजभानप्रानेगेअनुसंधानसुषुभिच्ये॥५॥  
 आङ्गेनेयेस्वभजाग्निः। विघ्नेदोर्वभसुषुभि। तेजसुनेगेजा

Rajendra Singh  
Rajendra Singh  
Rajendra Singh  
Rajendra Singh  
Rajendra Singh

(4)

गरसुषुप्ति। परस्परेनेणनि अवस्थां तरणत्वा । जो जे अवस्थेच  
 उभिमानी ॥ तो तितें चिप्रकारी भवस्तेनि ॥ दुसरीं शानतया  
 चेनि ॥ कोहंडपाणिनकर्वे ॥ ८३ ॥ हजान्त्रं वेकीतें चिप्रकारि  
 पारि आपनी दिनेगपरियोग्य ॥ नाइतरांहिं अवस्थास्ता ॥ नि  
 श्यनेस्तनेगद्यान्ते ॥ सौ ॥ अवस्थातिहिं चेशान ॥ येकलो  
 येकरुआपणा ॥ एकस्तमा ॥ च अन्तस्तधाने ॥ स्वयेचिह्नण  
 करीतसे ॥ ८४ ॥ भलुतायश्चादपद्याध ॥ हर्वंजाणतन्तकलो  
 हेतालणता ॥ जाता ॥ जाणतोलणतो तेभा ॥ हो निंभासनपरिये ॥ ८५ ॥  
 दिं ॥ ८५ ॥ पद्याधजाणिपद्याधतें जाणता ॥ होहिं तें जापण  
 चिप्रकारिनागम्यां देविकलें ऐसेंलुकाता ॥ प्रकारे देखता

॥ ८५ ॥

(GA)

आपणासि ॥१०॥ अशिसान आभिप्रभाता प्रते हि साक्षी च प्र  
कारद्वाता लगो न साक्षिता न रघुनाथा गुनित्य अनें ताचिदपन्  
॥११॥ नित्य निरंतर सना नन स्वप्रकाश द्वेषन्मध्यना तनमध्य  
चिहो येनुं आपणा सवदा प्रधर रघुणाथा ॥१२॥ जे सावारनाव  
नुं आहासि ॥ तै साच्च उस जाहु मिहा ॥ इतु के निः स्वस्वर  
मिंचिभूतसि ॥ सांगो वस ति आणकाहा ॥१३॥ (लोक) मा  
भनया व्यभावा भाग्या नायभवा भावना मरिवलं य  
कायन्मध्यरक्तन्मया भवा गन कांग्रास्य जे किंचरपदादिपद  
था ॥ जे जे आपणासि हरपद्मवंभासता ॥ तद्यपन को हों अकस्मात्  
आपणा व्यतिरिक्त लगो नियां ॥१४॥ देहाद्यरप्यकारन करेता मा ॥

Sant Tukar Mandal, Ghule and the  
Jishwantrao Chavhan  
"Jorla" of  
Sanjivani Mandir, Ghule

(5)

ग्राहक अहंकारविशिष्टप्रभाता ॥ तदूपहि नको नियां तत्वतागसां  
 उकथा आस्य ग्राहकाची ॥ १५ ॥ अमांवेगलादुहोउना ॥ अरिवलुहि  
 भावनाजाठुटाकर्णे ॥ स्वरस्वरु पितनमेराहोना ॥ सरबसंपन्न  
 असस्वर्द्धा ॥ १६ ॥ हें चिगानि ध्यासनाचेव ना ॥ विजातीयसा  
 गं केवच्छब्दा ॥ आअउनदातावेन्द्रियमा ॥ प्रदं चोपरमकरुण  
 या ॥ १७ ॥ उलणसिमन आणनाचेसंकल्प ॥ निरुत्तरदेहि  
 असनां उमप ॥ तेसां डुनियां कसां तेउच्छुप ॥ अपेआपउ  
 सावे ॥ १८ ॥ तदृष्टिमेविषयिं गरच्छनाधा ॥ ताहसकासया ॥ १९ ॥  
 ॥ १९ ॥ उलांनानिता ॥ अतिसुखकरहाउपायकरिता ॥ उमासु  
 कमोकायधेभें ॥ २० ॥ तोहिउपाय आतां सांगेन्द्रा ॥ अयिकाय

(CSA)

कायकरुणियां मना अतिरामें सुगम सोपाना आयि करु  
 परधुराया ॥००१॥ ॥ लोका संकल्पे मैव संकल्पमनसे व  
 मनो मुने ॥ छित्रास्वात्मनिरिष्टत्यं किनतावतिउकरौ ॥०१॥  
 दीका अगरे सासंदेह उज्जाचित्रि स्वरूपराहातं ब्रह्माका  
 राश्चित्रि तेभसंकल्प ऊ ठित्रि तेकरिनिरपंचाका  
 ॥०२॥ ह अंतरीक्षस्वरूपराहाणा तवसंकल्पहुगत्वान् का  
 ये ॥ कोठिरधालनित्वं नहा करियाहे निषयाकार ॥०३॥  
 ऊरस्यावधहे उनिष्ठापना कीजे संकल्पाचंडेना गतवं  
 अंतरिम्मुक्तजस्यात्माचं मना तेनं संकल्पनकाटिकरौ ॥०४॥  
 नोनिनिदृष्ट्यासना स्थिनिद्वयना मनओ ॥ णसंकल्प अंतरा

The Bhagavad Gita and the  
 Sanskrit Manuscript Project

(6)

१३३।

यश्चतागे असनां न के जेरवर स्वपस्त ॥ ते सों चिन्तादुइः  
 मानिा। भक्तिरिया चौ उपाये रघुपति। अस्त्रवसां नेन्द्रुज  
 प्रदीपि तेविदुष धरणियां चिला। कर्मसुमनि उचाय सा ॥५॥  
 तरु असदसंकल्प जो देह कारा। सास्त्रब्रह्मा स्मिं संक  
 ल्पे चक्रं भार। आठनकनाहि उपायां नहु। संकल्पारं  
 क्षारजे नं होय ॥६॥ देहा दिव्याकार संकल्प ऊठि। त  
 याते को गवाछि याव क्षे ॥७॥ सापनां तरते आटोजा  
 ठि। सास्त्रब्रह्मजगडे ठिवाचु निर्ग ॥८॥ दिव्यपरं तर संकल्प ॥९॥  
 यो भारिता ब्रह्मा स्मिं संकल्पे विणना। हितव्यता। यालु  
 भिसंकल्पे संकल्प सवधा। पावविं जानां राम चेंदा ॥१॥

(6A)

नाहेसंकल्पहसरुलियावरिगपर्मननोंजस्येऽन्तर्दिंत  
 शिस्माचिह्नसांगापर्मि। आदिकनिधारिरघुपुंगवा॥१५॥  
 गासंकल्पविकल्पसकमना। जेंकिंकरिजन्दंचानुसंधान  
 देहादिकसंसारमान्तर्गतिरिजागतअन्तर्द्वा॥१६॥ त्रयस्तिष्ठुडे  
 मनेकरभिर्जेबासाकारत्तेअहरभरन्नामि॥ देषटष्टष्ट्याप  
 रहवीविष्टयांपासुनिः। तेचिभवसेनशुद्धमनः॥१७॥ तेनो  
 मनेकरभिश्वरस्त्वगाथा। उत्तरमनछेदवेसवभाग  
 भिरंतकरवीबासाकारता। हिचिछेदकतात्याच्या॥१८॥  
 येहंदेहिंशुद्धकरभिः। मनसंकल्पदेहिंछेदुनिः। स्वरस्य  
 द्वापेसोहनिवाणि॥ कोदंडपुरस्तान्देव॥१९॥ त्रिलेंठत्तमले

(७)

हरितकलोहं कुठोरं करणिछेहि जनज्ञाहे ॥ तैसें शुद्ध  
 संकल्पमनें करि होये ॥ दहनपाहे अतु द्वाचे ॥ १४ ॥ तैसें  
 रागद्वेषादिकिंवातलें ॥ तैसन् शुद्धमनें पाहेजेहि द्वेषादिलें ॥ जें  
 रागद्वेषसागैनिवालें ॥ स्त्रियस्वजालें आसवासि ॥ १५ ॥ अ  
 गामिनुकें साधनकरवय ॥ दुष्करकायजा रघुरामा  
 स्त्रियस्वरूपिनिय असावया के रत्याकायी हाति ॥ १६ ॥ अ  
 गाजेभपरमानंदनिरंतरगता हुः रवाचाले द्वाकुरुतेंधि ॥ १७ ॥  
 ॥ १८ ॥ आसस्वरूपानवीकार ॥ तदुकारदोहसदा ॥ १८ ॥ तेप्राहा  
 गं कोणदुःरवै असे ॥ एसें बचारुणपाहमानसीं हैसांडु

The Repository of Sanskrit Manuscripts  
 Department of Archives & Library  
 Government of Odisha  
 Yashoda Kanta Chanda  
 Puri

देहासि

(४)

निदेहाच्चाअध्यात्मेण॥ लोकपिसेहातानिग्रन्थसेवाटिंदे  
 हतवंहुपुरुषनके॥ कैसाक्षयासिकायसंबंधजाहे॥ आ  
 श्यर्यकराजिनिंहुतजाहे॥ कैसाप्रहेहुदेहा॥ १५॥ लोकपंच  
 कीहेनिरुपण॥ वस्त्रिष्ठकारितेहुमिंहुला॥ यात्राजिलोकद्वये  
 देहध्यादव्याना॥ भिन्नपणदेहतन्नाग॥ २०॥ लोकत्रयेंजे  
 नाचीनिंदकरी॥ आश्यर्यकरितांननामअंतरिगवासाच्च  
 स्वस्वरूपत्यजुनिःभिकारी॥ देहुंधरिमांचलणीनिग॥ २१॥ ऐ  
 सेपांचांलोकिनिरुपण॥ स्वयंकरी॥ श्रीवस्त्रिष्ठआपणगत्या  
 माजिलोकद्वये देहुलक्षणगत्रोतावधानपरिस्तिजे॥ २२॥  
 तेनिरुपणजामिकारुयांचिसाटिं॥ लुटे देहुआलया

(४)

चीगाठा। देहनिरद्वे उठा उठा। होये भे इस्वर्यत्तमा ॥३३॥  
 तें चिनिस्पृणज्ञाता ग्रेकाग्रपरिसावें श्रोतां। जें किंवद्विष  
 श्रीरघुनाथा। लोभे तत्त्वताबोहिनुहो। २४। लोका ॥ १। करा  
 वायेजउन्मुखका देहो। श्रवतिराघव। मदर्थसुखवदुःखा  
 भासवदः परिष्वर्यते ॥३४॥ २५। श्रीकाः। अगाकोणहानुजकार  
 नें। देहजालगादेहपरें। देहाधिसंग्रहनलक्षणें। सगजाण  
 रुणेओपणास्ति ॥२५॥ अगाहादेहतरिजउआति। अप्रका  
 शपाबाणस्थिति। उत्तें अमुक्तसवधिग्रीष्मीतापतिजा ॥३५॥  
 यन्दं ॥२६॥ जें अजउआगिस्वरकाशअस्ति। नें चिन्मुक्तजा  
 नस्तवं द्वैं। उत्तें अमुक्तजाणएस्ति। वस्तविधे नोजाणवे ॥३६॥

॥३५॥

(8A)

आगिया देहाची परब्रह्मगति। प्रारब्धाधीनवसवद्विग्नि  
 स्वां ब्रह्मत्रिचोजैस्तीम्भुत्तिः। स्तुत्रे वर्ततितदधीनः। रजस्त्वा  
 धारा चिया जाणस्त्वं। वर्ततिरवां ब्रह्मत्रिचित्तमेंत्रे। तेस्तेंदह  
 स्तुत्रदुःखविचित्रे। भीमा परत्रंत्रे प्रारब्धेकरी। २९। ऐसाहा  
 देहकुश्यितजाण। तोच्युआपण लभ्यविलुकोण। जउम्भुठसु  
 रवदुःखाच्यभाजनत्परिणामिष्ठूण विकारवत्तम। ३०। आण  
 कीहुञ्जपाउन्दुजदेहास्तात्तं हिस्तागो हृषिकेश। एकहिसाम्भ  
 ऊजदेहाम्भिगयेकेहिअंद्रिं औस्तेचिन्ता। ३१। दिहजागतां आपण  
 मिंकिस्ता। आसत्येनेवयमाजाणामगकरित्तान्निदध्यासनः।  
 अतिस्तोपानरुद्धराया। ३२। लुगोनि जायिक देहाच्येन्दह

(9)

ण। हुतवं जात्स्वरूपा स्मिति लक्षणा जाणतां चिरो वे आप  
 आपणे॥ तें चिनि रूपण परिये क्षिणा ॥३३॥ शोका क्रमांस तरुधिरा  
 हौनि कल्यं चैतन्यविग्रहः। विजानं तप्रदै हे क्षितिन्द्रजात्स्वरूप  
 मिंजहा क्षिण ॥११॥ टोका उगादेह तों जाण एवं धूता। मां  
 स तरुधिरा इकं क्रमिता। अस्ति च महजाविष्टाक्षरत्वे। ता  
 करजनपुरवेक्षणा ॥४४॥ स वहा दुर्गं धिच्छें ब्रिघारा। अंतरिक्ष  
 मिजंतनिरंतरा। स्ववतीतवति दोरं दुर्धरणा ॥५५॥ तिस पुरस्व  
 हिंगव्ले। ॥५५॥ आणि हेष छुका राचेस्त्राना। जायते जाति ॥५६॥  
 विवधत्वे जाणा। विवरीण स्त्रो अपेक्षीयते तरण। साहं वेंसर  
 ण निकास रेस्ता। ॥५६॥ मां चित्तलक्षणे। हुतजपता। नागं सांगित

॥५६॥

(9A)

हिंगरधुपति॥३॥ आगनिरुपितापुनर्तक्षिः॥ विश्वा  
 अतिग्रंथास्त्रिहोयो॥४॥ आगिष्ठुविहसहारण  
 धियेदेहिवर्ततिश्रितामाजाण॥ कुधान्धारोक्षमोहनी  
 क्षण॥ उद्दोम्प्रस्तुकजाणआतिदृशरात्रा३॥ हेत्वेकेकबोलना  
 रधुपति॥ चिक्करिसपात्रसवभिंश्चित्तिणामिंनिंघन्धर  
 गति॥ कुचित्तिष्ठितपविधि॥५॥ तरिरेसादेहिहाकोणि  
 केडे॥ आगिष्ठविचारिचैतन्पकोणीकडे॥ देहिंसोविचा  
 रितांसाम्पन्धडे॥ पाहतांअपाडेक्षराक्षरत्वो॥६॥ रेसाहा  
 आसाकुंस्त्रान्तिअक्षरञ्जिवनारिशा॥ शानंस्यक्षपञ्जानंदर

(10)

श्वारेसे असो नियां दे हात्सि ॥ आत्मत्वे के सीधे रिसि बु  
 द्धि ॥ ४७ ॥ अगादो हिंस्त अपाउ सबां परेशे जाणता जा  
 न तो गारावणा श्रीदेहि आत्म बुद्धि शुद्धकरि ॥ लोके हंडु  
 रिटा कितना ॥ ४८ ॥ कुजाँह दा किनां कवण सांकड़े ॥ हो हिंते ज  
 न सितों अपडे ॥ उं जहरा न विकार धृतफुड़े ॥ सासि परिति पा  
 उं देह बोहा ॥ ५१ ॥ देह परिण मिं असंग छ रा जउ विका  
 र अणिन बरु ॥ ए द्यासि आत्माये काकारु आत्मविका ॥ ५२ ॥  
 र के विहोये ॥ ५३ ॥ अगारेस यादे हाचांठा अं आत्म बु  
 द्धि दा कितों भाडिया काया ॥ वाला गदहु आत्म बुद्धि दा कु न

(10A)

पाहिं। सर्वदाराहिंस्वरूपिणि॥४५॥ लोका एतावतेवदेवे  
 राः परमात्मावगम्यते। काष्ठलोषसम्बुद्धेहायदवगम्य  
 ते॥४६॥ दीक्षा अग्रधिन किञ्चाधिकर्मकरूपण। देवाचा  
 देवपादिजेनिकर्णिण। तेहिनन्दनजुलागुरुनकार्तुकपूर्णि  
 सांगेना॥४७॥ जोसंबोधस्पृशकाश्रामकार्मि। स्वातेदेवोस  
 णिजेगाओन्दराद्रिण। ईश्वराद्रादेशकाद्राहिंशकार्मि॥४८॥  
 वस्त्वेसंस्तचारूपै॥४९॥ तदन्दनरावस्थानेवाविजे। किंतेऽधि  
 होउनिस्वयंज्ञस्तजे। जरीहादेहकाष्ठन्दल्पदेशिक्ते॥५०॥  
 मतानेणिजेयाचाठाधिं॥५१॥ अध्यवाकीटलोष्टादिमेव  
 नष्टदेशिक्तेहुसमूल्य। साचाठाधिंअनासक्तेवक्त्वा

नाहिं तो हजावज्जवापरि ॥५९॥ तैसाचेदेहं सर्वतुउदा  
सा ॥ परका मत्येदेरवेसुभास्त्वा ॥ तरीचब्रह्म सिरहेवा  
स ॥ सावकाश हृष्टिहोये ॥ ५०॥ देहिसमनादृथपरि  
तां ॥ आसत्येदेहसिन्धसानतां ॥ कदानेघेगाजासना ॥  
नघेसवधानलुप्तणा ॥५१॥ देहपाककीयत्वे अन्यदेरव  
णे ॥ सिध्माभूतमनजाणने ॥ तरिचब्रह्मलुकुरवपावना ॥  
जाणयेरबुगेरधुनाभागपुर ॥ लोका ॥ अहो नुचित्रं प्रल  
संब्रह्मतद्विस्मृतं नरणां ॥ यदस्त्वं सविधारव्यंतसरुपाः ॥५२॥  
वलात्तिगामा इकाए ॥ लगे जाहकटकटावोरवटे ॥ मा  
जनोचेष्टसुप्रसाठे ॥ जैसत्प्रब्रह्मकदानविटे ॥ दिले

(11)

१३५॥

(11A)

प्रगटेस्तवंस्तिहि ॥५३॥ काळत्रिदिंजे अबा धिता ॥ तेष्व  
 स्मजाणपात्रिस्त्वेगतें चिनें चित्यानंदमारिनु ॥ ब्रह्मसदोद्दत्त  
 अपरोक्षजे ॥ ५४॥ अहोत्यातें विस्त्रोनियानं नरु विस्मरेत्ति  
 वर्त्तिति निरंता ॥ आगिऽस्त्वजेपरोक्षनन्यनुजे किंशरी  
 रजीवधारवा ॥ ५५॥ श्रीविजयचरीरटेसे ॥ यथा चेव्यारवा  
 नतवंरेसे ॥ अवयवग्रामति आपेसे ॥ स्वयें चिनाद्वेविश्री  
 नहोउक्ति ॥ ५६॥ वृतनपद्येसाद्य अति ॥ स्वयें चित्याचे  
 तंदुविश्री नहोति ॥ तंदुविश्री में वदुचारांति ॥ नकाउति त  
 किंकाटे ॥ ५७॥ नातश्चक्षुजेसे ॥ नारण्यञ्जनिदृष्टं

e Rawade S. S. Odhan Mandal Library  
 श्री विजयचरी विश्री विश्री विश्री  
 चिनाद्वेविश्री चिनाद्वेविश्री

(12)

ले। तेऽस्य ये चिपरिपाकपावो निनारो। को छिंन न स्पर्शे दुर्गं  
 द्विनें। ५८। पूर्णपैसे स्वयमेवि जेंवि शौण होता क्लैंसिगं धेकरणि  
 जेंदुक्का। मगस्यमें चिअस्त्रेनाशता उपचारित सहस्रज  
 हिं। ५९। तथानें रारी रुरे स्त्रेस्त्रानि आता देह द्राबदु चि  
 आधिकाविष्टता। दृष्ट्यो भ्राविष्ट स्त्रामे स्त्रादे ह इति। एसे  
 बोलति शास्त्रहजे॥ ६०। आधिकाविष्टत उपदेवता ध्यात्मिका  
 ॥६१। एसे हेत्रिविधता पदेरव। ये हिकरणि जातु सम्प्रकरा।  
 तथा निष्टकं दे हस्ताण ज। ६२। आधिकाविष्टते जाविधास  
 ण उ। ये में विधमाननकं सहजे। आविष्टपासावउत्त

(12A)

निपाविजे। अविधाजागिजेस्त्रिंसंतहेचि॥६३॥ एवं  
 मिथ्यापूर्वकुम्भितररीरा सातेंमीचलणीनिवलगति  
 स्याचेंशरण कोषण उपथारा तिरतर करितिष्ठतें॥६४॥  
 अगाहेंतविचित्रस्वामासारि॥ सन्पुरुषवस्तुपवस्तुते  
 करितिदुरि॥ अपरोक्षलूपस्वर्णपारि॥ आनंदलहरिरूप  
 प्रकाशे॥६५॥ अगाकेवव्यते तातांचिमोद्धिगरक्षमासमज्ञा  
 दिकांचैपोदक्षिणा अतिसौहोचैसोहकाजद्विणा॥ दुर्गंजिभ  
 लिगोठहौजेकिं॥६६॥ तेऽप्यणादेवतांचिनाशतान  
 वहद्वारिलगतानरपता॥ तेसादेहस्वैर्तेदेवतामीलणा

(13)

त अभाग्य परेणं ॥६९॥ धन्वसा चिभाता पिना ॥ धन्पविचारसां  
 चारधुनाधाग् रेसे देरवो निदेह मीत्तणतांग् लुजसवधां  
 से चिनाग् ॥७०॥ अहो स्वतंस द्वयल आपण जैसतां ॥ लोकं  
 लोजे मीत्तणतां ॥ मजाजिका जाहे रे सेमुसो जातां ॥७१॥  
 जसवधां लोकं माजिगृहा अहो जेणे पुस्तें चिन कच्छ  
 हातिं वरह आणि वरह डोवे ॥ पाठेसमवत वेडावलें ॥७२॥  
 नकच्छेसवधां ॥७३॥ तें रवेण लंहाच्युं किं नकं ॥ रेसें जेणे  
 करी जनापुसो जायि ॥ तें चपकादि तेनया नेणवे ॥ का  
 यबो लोवेन वरह साचि ॥७४॥ अगामुख विचारिं च कुष्ठलग  
 ला ॥ तेने मीत्तणतां लुडो लोका ला ॥ लोक लणतां ॥७५॥

॥४०॥

(13 A)

मिंवेऽवल्ला। लाजते नेकां पावन् ॥७१॥ उपस्थु कुरुष्टि  
वेश्मास्ति विलासे षुविलुजाति। उपरिद्वं कुष्टजात्मजियेसि।  
तेवेश्यनिश्चापणें लज्जेस्तामेसा। विलासकरितां सरणति  
येसा तेस्येवास्तिजात्मेआस्ति। ॥७२॥ मुख्यतो आसविचा  
रगतेभस्तंदेहान्वं कुष्टभीरागलसणो नितो गंवारा। ला  
जेफारञ्जलास्तणतां ॥७३॥ एसं हेविष्वन्त्रवोटेभारिगस्त्य  
स्वप्रकाशावस्थकरितिदुर्गेआसत्येवांधनिममनोपरि।  
हेहसंभीजापणास्तण। ॥७४॥ असो आणिकहिसांगो किति।  
यद्याजनान्विनिपरीतगति तेपरम आश्चर्यज्ञानकैप

(14)

ती। उजप्रतिसांगेन्मेष्टुलोका। अन्यचित्वंयत्परमं  
 ब्रह्मतदिक्षमृतनन्दणा। यन्मेष्टमविद्यारव्यन्तमुरः प्रब्रह्मा  
 यते॥४॥ ईका।। जागामोटेहेआव्यरस्ताकांतागायेका।  
 ग्रआधिकरघुनाथा। जेपरमसवाचिवारतव्यनानानेभ  
 लजनंताविसरलेग।। १४९॥ अलासकवांचेकारणकृत॥ ॥४९॥  
 वास्तवज्ञाणिनिजानदभरतगतयतेचिजनविसरजा।  
 कोटिकल्पानेउपजानया।। ५०॥ ऐसेविसरोणिगारघुपदिगा।  
 नघरदेहातेसीचरेसेसणानि। आपणवारुव्यजीहतेया  
 किण्ठा। नकेतेघरितकुछितदेहगुणआणिदेहसंबोधि।

"Rajkumar Sanskrit Manuscript Collection and the Yasodhara Manuscript Collection"



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)